जानकी

विजय लक्ष्मी चौहान

अगर कोई मुझसे कहे कि शिक्षा लोगों को अक्लमंद बनाती है तो मैं कहूगां— सब बकवास है। अगर कोई कहे कि धन-धान्य व बड़े आलीशान बंगले में रहने से खुशियां मिलती हैं तो भी मैं कहूंगा यह सच नहीं है। लोग समझते हैं मैं पागल हूं। अगर पागल नहीं होता तो नीम के पेड़ के नीचे बैठकर, रुपये-दो रुपये के लिए साईकिल मरम्मत क्यों करता? कोई बढ़िया सी नौकरी नहीं ढूंढता? पर ये सब अनजान हैं। ये उस सच्चाई से वाक़िफ नहीं है जो मेरे सीने में दफ़न है। वे नहीं जानते कि ज़्यादा होने का मतलब सब कुछ होना नहीं है। मेरे मालिक सुधीर व जानकी ठाकुर-उनके पास तो वह सब कुछ था जिसके लोग ख़्वाब देखते हैं— आलीशान घर, दो कारें, दोस्त, नाम, पैसा, रुतबा। सुधीर साब एक बड़ी कपड़े की फर्म में मैनेजर थे। जानकी मेमसाब एक सफल वकील। मैं बारह साल का था जब अपना गांव और पांचवी की पढ़ाई अधूरी छोड़कर जयपुर आया था, काम की तलाश में। दादी के गुज़र जाने पर मैं दूसरी बार अनाथ हो गया था। पहली बार मैं यतीम तब हुआ था जब गांव में बाढ़ आई, नौ साल पहले और अन्य चीज़ों के साथ मेरे माता-पिता को भी बहा ले गई थी। पर ये मेरी कहानी नहीं है। ये उन लोगों की जीवन गाथा है जिन्हें मैं सबसे ज़्यादा प्यार करता था। जानकी मेमसाब और सुधीर साब की- वह जोड़ी जिसे मैं राम-सीता की जोड़ी कहा करता था।

जानकी मेमसाब ने मुझे घर के छुट-पुट कामों के लिए रखा था-चाय बनाना, बाज़ार से सौदा-सुल्फ़ लाना, साब की गाड़ी धोना व अन्य हल्के-फुल्के काम। उस समय मेमसाब गर्भपात होने के कारण घर पर आराम कर रही थीं। दूसरे नौकर भी थे— मिसरानी, झाड़ू-पोंछा करने वाली बाई, ड्राइवर, माली पर घर में चौबीसों घंटे रहने वाला मैं ही था। एक वर्ष बाद जब रसोइया चला गया तब उसका काम भी मैंने ही संभाल लिया। साब और मेमसाब मुझ पर भरोसा करते, अपने बच्चे की तरह मानते थे। बदकिस्मती से उनके खुद के बच्चे नहीं थे। मैं रोज़ हनुमान चालीसा पढ़ता और हनुमान जी से विनती करता कि उनको औलाद की खुशी दें परन्तु भगवान ने भी मेरी बात नहीं सुनी थी।

मुझे काम करते हुए कुछ ही दिन हुए थे जब जानकी मेमसाब ने मेरा स्कूल में दाख़िला कराने का निश्चय किया। वह नहीं चाहती थी कि मैं पूरी ज़िंदगी बर्तन धोने या खाना पकाने में बरबाद करूं। मैं सुबह स्कूल जाता, दोपहर को वापस लौटता, मेमसाब के पेड़-पौधों को पानी देता, साब के लौटने पर दोनों के लिए चाय बनाता और पेड़ के नीचे बैठकर स्कूल का होमवर्क करता। हमारे यहां खूब सारे फूलों वाले पेड़ थे— सेमल, गुलमोहर, हरसिंगार। खुशबूदार पौधे भी थे-चंपा, चमेली, जुही। पर मुझे रात की रानी सबसे ज़्यादा पसंद थी-उसकी खुशबू रात ढलने के साथ-साथ और भी मनमोहक होती जाती थी।

मुझे अभी भी याद है वह मदहोश करने वाली खुशबू जो साहब की स्टडी को सराबोर कर रही थी, उस रात जब मैं खिड़की बंद करने गया। हम रात ढलने से पहले मेमसाब के लौटने का इंतज़ार कर रहे थे।

'यह सर्वोच्च न्यायालय में मेरा पहला केस है,' दिल्ली जाने के एक रोज़ पहले उन्होंने मुझे बताया था। मैं आमलेट के लिए प्याज़ काट रहा था। 'मंगू मुझे यह केस जीतना होगा' वह बोलीं। 'आप जीतेंगी' मैनें प्याज़ की धांस से बहते आंसू पोंछते हुए कहा। 'आप इतना सब कुछ तो जानती हैं मेमसाब'। मेमसाब बहुत होशियार थीं। अगर इतनी काबिल न होती तो दो बार केस जीतने पर अखबार में उनका फोटो कैसे छपता? मैं हनुमान जी से प्रार्थना करूंगा,' मैंने कहा। मेमसाब ने अपनी प्यारी सी मुसकुराहट बिखेरते हुए मेरे सर पर हाथ फेरा और मुझे लगा जैसे खिड़की से सूरज की किरणों ने आकर पूरी रसोई को रोशन कर दिया है।

'मैं परसों वापस लौटूंगी', उन्होंने साब से कहा! हर दिन की तरह साब दफ्तर में ज़रूरी मीटिंग के लिए निकलने से पहले चाय गटक रहे थे। कप नीचे रखकर उन्होंने मेमसाब का हाथ अपने हाथों में लेकर कहा, 'अच्छा रहता अगर तुम ट्रेन या

हवाई जहाज़ से जातीं। मुझे तुम्हारा दिल्ली-जयपुर हाइवे पर अकेले गाड़ी चलाकर जाना कुछ ठीक नहीं लगता, खासकर रात के समय जब ट्रक चालक नशे में धुत्त होकर अंधाधुंध गाड़ी चलाते हैं।'

साब बेकार ही इतनी चिंता करते हैं। मेमसाब हमेशा मुझसे यही कहती थीं। 'अगर उनके पास समय होता तो केस खत्म होने से लेकर मेरे घर लौटने तक वे घड़ी की सुईयां ही गिनते रहते।'

एक बार पक्का इरादा कर लेने के बाद मेमसाब किसी की कोई बात नहीं सुनती थी। मुस्कुराते हुए वह साब से बोली, 'फिर चिन्ता। तुम जानते हो मैं कितनी सावधानी से गाड़ी चलाती हूं। मैंने कभी भी कोई दुर्घटना नहीं की है।' 'हां यह तो सच है,' शब्दों को सावधानी से तोलते हुए साब ने जवाब दिया, 'पर तुम जानती हो न-तुम रात को दिल्ली में रुककर सुबह क्यों नहीं वापस आतीं?'

'मैं घर आना चाहती हूं, सुधीर' हथेली के बीच साब का हाथ दबाते हुए मेमसाब प्यार से बोलीं। 'किसी बेकार से होटल में रात क्यों बितांऊं'। साब खामोश हो गये। क्यों-कैसे? पर उनके माथे पर चिंता की रेखाएं तब भी बिखरी पड़ी थीं जब वे दफ़्तर जाने के लिए गाड़ी में बैठे।

थोड़ी देर बाद दूसरे दिन रात के खाने के समय लौटने का वादा करके मेमसाब भी चली गईं। 'जल्दी वापस आईएगा' मैंने उन्हें गाड़ी में बैठते देख कहा। उनकी गैर मौजूदगी में खाली घर मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। तब घर बहुत बड़ा और उदासीन प्रतीत होता था। मुझे कोई खास काम भी नहीं होते थे- साब मेमसाब के न होने पर बहुत कम खाते थे। सारा दिन अपनी स्टडी में बैठकर काम करते रहते थे। मैं अपना वक़्त पढ़ने या टीवी देखने में बिताता था।

शाम को मेमसाब लौटने वाली थी, मैंने उनकी व साब की पंसद का खाना बनाया। साब का पसंदीदा भरवां करेला और मेमसाब के लिए माखनी दाल। उनके लौटने के ख़्याल से ही घर की दीवारें जीवंत हो उठी थीं। सूरज डूब रहा था और उसकी लालिमा किरणें पेड़ों की शाखाओं पर अठखेलियां कर रही थीं। चिड़ियों की चहचहाहट रात के सन्नाटों में धीरे-धीरे ढल रही थी। दूर कहीं किसी रेडियो पर कोई फ़िल्मी गीत के स्वर हवा में घुल रहे थे। काम से वापस लौटकर साब सीधे अपनी स्टडी में चले गये थे। जाने से पहले चाय की ट्रे से एक बिस्कुट उठाते हुए उन्होंने मुझे हिदायत दी, 'मैं उनके लौटने से पहले सब काम खत्म करना चाहता हूं। अगर किसी का फोन आये तो कहना मैं घर पर नहीं हूं।'

'जी साब,' मैं अवांछनीय फोन करने वालों से साब को दूर रखना बखूबी जानता था। पर उस शाम मैं उन्हें *होनी* के ज़हरीले शिकंजों से नहीं बचा पाया। *होनी* उस शाम उस नीच धोबी के रूप में हमारे घर आई थी। मैं खीर के लिए पिस्ते छील रहा था जब धोबिन ने चीखना शुरू किया था।

सट्टाक! चट्टाक! चीखें। गालियां। धोबी उसे फिर पीट रहा था। शाम की निस्तब्धता तिनके-तिनके होकर बिखर गई— 'तू कोढ़ी की मौत मरेगा', तेरे मुँह में पानी डालने वाला भी कोई नहीं बचेगा,' धोबिन चिल्ला रही थी। 'चुप कर, चुड़ैल'। 'हाय राम, पागल कुत्ता नशे में धुत्त है। यह मुझे मार डालेगा। हे भगवान मेरे बच्चे अनाथ हो जाएंगे।' मैं घबरा रहा था कि अब साब फट पड़ेंगे। उन्हें धोबी के ये रोज़ के झगड़ो-टंटो से सख्त नफ़रत थी। सच तो यह था कि वह धोबी का टीन-टप्पर कब का फिंकवा चुके होते अगर मेमसाब ने बीच में उन्हें न समझाया होता, 'वह मूर्ख, अनपढ़ जाहिल है, वह कहती थी। तुम उसको नहीं बदल सकते।' 'छोड़ो भी।' मेमसाब और कालोनी की अधिकतर औरतों को यह छोटा सा प्रेस का अड्डा पसंद था। वे यहां से झटपट साड़ी, कमीज़, ब्लाउज़ प्रेस करा सकती थीं। धोबी सुबह-सुबह घरों से गंदे कपड़े भी इकट्ठे करके ले जाता था, फिर उन्हें नदी पर धोकर धोबिन को देता। प्रेस करके साफ़-सुथरे कपड़े दूसरे दिन घरों में पहुंच जाते।

'भगवान करे तू उसी नदी में डूब मरे जिसमें तू कपड़े धोता है,' धोबिन की आवाज़ मेरे कानो के पर्दे फाड़ रही थी। 'अगर तुझे कोई मगरमच्छ खा जाए तो भी मैं एक टसुआ न बहाऊंगी।' हा! हा! धोबी का अट्टाहास, 'अरे बावली नदी में एक भी मगरमच्छ नहीं है। अगर होता तो मैंने तुझे पहले ही उसके मुँह में झोंक दिया होता।' पास-पड़ोस के नौकरों की हंसी की आवाज़ें भी मुझे सुनाई दे रही थीं। वे सब बाहर खड़े होकर तमाशे का लुत्फ़ उठा रहे होंगे। 'तुम कर भी क्या सकते हो। कोई बेगैरत मर्द ही अपनी पत्नी का यूं तमाशा बनाकर उसे बद्दुआ देता है...।' 'मंगू' साब की गुस्से भरी आवाज़ सुनकर मैं पिस्ते छोड़कर स्टडी की तरफ दौड़ा। 'क्या तुम उन्हें चुप रहने को नहीं कह सकते।' मुझे देखते ही वह बोले। 'जी साब, मैं जाने के लिए मुड़ा।'

'हरामी', साब ने मेज़ पर मुक्का मारा और सारे कागज़ों का पुलिंदा कमरे में इधर-उधर बिखर गया। मैंने चुपचाप सब

कागज़ समेटे और वापस मेज़ पर रख दिए। 'आज वह किस बात पर उसे पीट रहा है। 'कुछ नहीं साब। बेकार है, बकवास।' 'तो क्या बात है।' 'वह पागल है साब। एकदम पागल।'

'वो तो है। मैं उस बेवकूफ़ से बात करता हूं', बुदबुदाते हुए साब कुर्सी खींच का उठे। 'नहीं, साब! वे पीए हुए है।' मैं साहब को रोकना चाहता था। जानता था धोबी की बकबास साहब बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे। उन्हें अपने गुस्से पर काबू नहीं था।'

धोबी फिर चिल्लाने लगा था, 'बेशर्म औरत, तू...।' 'इसका दिमाग एकदम खराब हो गया है। ऐसे बक रहा है जैसे वह किसी दूसरे आदमी के साथ भाग गई हो। क्या माजरा है मंगू?' 'धोबिन की वह फोटो जो आपने रमेश बाबू के साथ...', मेरी बात पूरी होने से पहले साब हंसने लगे थे।

रमेश बाबू साब के दोस्त थे, स्कूल से। अमरीका से भारत वह फ़िल्म बनाने के लिए आए थे-केरल के मछुआरों की जीवनी। केरल जाने से पहले वे चार दिन हमारे साथ रहे। उन चार दिनों में उन्होंने इतनी सारी बातें की और सब को इतना हँसाया कि पूरा घर ही खुशी से झूमता प्रतीत हुआ। वे बड़े ही बेचैन किस्म के इंसान थे, एक जगह टिककर नहीं बैठते थे। चूंकि साब उस समय रिपोर्ट लिखने में व्यस्त थे लिहाज़ा उनका ज़्यादा समय मेमसाब के साथ ही बीतता था। वहीं उन्हें घुमाने-फिराने-शापिंग ले जाती थीं। रात में देर तक उनसे बातें करतीं जब साब अपना काम निपटा रहे होते थे। मैंने मेमसाब को इतना हंसते हुए कभी नहीं देखा था। जब रमेश बाबू चले गये तब ऐसा लगा जैसे सूरज का उजास उनके साथ चला गया हो।

'न्यूयार्क लौटने से पहले तुम वापस यहां आना', साब ने कहा था। वे खाना खा रहे थे और मैं उन्हें गरमा-गरम चपाती परोस रहा था।

'काश मैं कुछ दिन और रुक सकता,' वह बोले, 'परन्तु मुझे यह काम दो हफ़्तों में निपटाना है। अगली बार वादा रहा।' 'ठीक है' साब बोले, 'तब हम सब माउंट अबू चलेंगे। कोई रिपोर्ट नहीं लिखूंगा। कोई ब्रीफ नहीं तैयार की जाएगी।' उन्होंने मेमसाब को आंख मारी।

मुझे यकीन है कि उस समय *होनी* किसी कोने से उनकी इस खुशी को नज़र लगा रही थी- मेरी नानी भी यहीं कहती थीं।

रमेश बाबू के केरल जाने से एक दिन पहले मुझे अच्छी तरह याद है- वे बेचैनी से घूमते तस्वीरे खींच रहे थे— यहां-वहां। बगीचे में गुलाब की झाड़ियां छांट रही, सूखी पत्तियों के बीच बैठी मेमसाब। या पान चबाता, सब्ज़ियां काटता, हनुमान जी की आरती उतारता मैं। पेड़ों, पौधों और पंछियों की तस्वीरें।

'मैं तुम दोनों की एक सहज सी फोटो खींचना चाहता हूं,' उन्होंने साब-मेमसाब को अनायास ही कहा। फिर उन दोनों का सेमुल के लाल फूलों के झुरमुट तले बैठाकर खच्च से फोटो उतार डाली।

यही तस्वीर अब साब की मेज की शोभा बढ़ा रही थी। मेमसाब इसमें बड़ी मासूम लग रही थी, गालों पर मिट्टी और हवा से बिखरे बाल। साब हमेशा की तरह बिल्कुल टिच्च, खादी का पाजामा-कुर्त्ता और हाथ मेमसाब के कंधों तक पहुंचने के लिए आधा उठा हुआ, होठों के कोनों पर बिखरी मुस्कुराहट, जब रमेश बाबू ने कैमरे का बटन दबा दिया था। काश वह दो सैकंड़ रुके होते, तस्वीर तब पूरी होती। साब का हाथ मेमसाब के कंधों पर होता और उनकी हंसी आखों तक पहुंची होती। पर कुछ बातें अधूरी ही रहती हैं— यही नियति को मंजूर होता है।

रमेश बाबू कैमरा रख रहे थे जब धोबिन अपने दोनों बच्चों को लेकर आ पहुंची। 'एक फोटो मेरे बच्चों की भी उतार दो बाबू' उसने मनुहार की।

रमेश बाबू ने उसे छोटे बच्चे को गोदी में उठाने के लिए कहा वह दूसरा हाथ बड़े के कंधे पर रखवाया। 'यहां खड़े हो बेटे और मुझे अपने दांत दिखाओ।'

कैमरे का फोकस साध कर उन्होंने कैमरा साब को थमाया, 'तुम खींचो' और फुर्त्ती से धोबिन के बगल में आ खड़े हुए।

धोबिन खिलखिलाकर हंस पड़ी। दुबला-पतला मूंछो वाला पुरुष, चेहरे पर चोट का निशान, चौड़ी नाक पर फिसलता चश्मा और खुला मुँह— उसे भी यह मंज़र गुदगुदा गया। साब ने उसी क्षण को फोटो में कैद कर लिया था। रमेश बाबू सिर पीछे कर खिलखिलाते हुए और धूप में चमकता उनका चोट का निशान। बेडौल, ठिगनी धोबिन जिसने हंसी दबाने के लिए अपनी साड़ी का कोर मुंह में ठूस लिया था और गोल-गोल आंखों वाले बच्चे ने, अपने दांत दिखाने के लिए मुंह में ऊंगली डालकर उसे बड़ा सा खोल लिया था। वह दिन बड़ा ही खूबसूरत था, मार्च का महीना, हल्का गर्म सूरज, नर्म हवा के झोकें और लहलहाते भीनी-खुशबू बिखेरते गुलाब के फूल।

'भई उस फोटो में ऐसा क्या है'- कुर्सी पर पसरते हुए साब ने पूछा। 'वह एक गैर मर्द के साथ खड़ी है', मैंने समझाया। 'यह एक औरत के लिए सहीं नहीं है, धोबी कहता है।'

मैंने राहत की सांस ली, धोबी की आवाज़ धीमी हो गई थी। लगता है फिर पीने बैठ गया होगा। 'मैं खिड़की बंद कर देता हूं साब,' मैं खुली खिड़की की और बढ़ा। तभी रात की रानी की मदहोश खुशबू मेरे नथुनों तक पहुंची थी। मुझे अभी भी याद है वह महक। आज भी जब नीम के पेड़ तले मैं साइकिल बनाता हूं तो वहीं बावली महक मुझे झकझोर जाती है। मैं रसोई में लौटा ही था कि धोबी की बकझक फिर शुरु हो गई।

'...अरे वह अपनी बीवी को दूसरे मर्द के साथ गुलछर्रे उड़ाने की छूट दे सकता है। मेरे साथ यह सब नहीं चलेगा। अमीरों के अपने नए चोंचलें, बेहूदे नियम-कायदे होते हैं।'

मुझे इसे चुप कराना ही होगा, मैंने सोचा। बहुत अनाप-शनाप बक चुका यह। अगर साब ने धोबी की यह बकवास सुन ली तो इसका खून कर देंगे। मैं साब का गुस्सा जानता था। 'हनुमान लला, मदद करो', मैंने रसोई में रखी छोटी मूर्ति के आगे सर नवाया और बाहर निकल गया।

धोबी एक कूड़ेदान के पास बैठा चांद को निहार रहा था। मुझे आता देख उसने अपनी बोतल मेरी ओर बढ़ा दी। मैंने उसे डपटकर घर जाने को कहा। 'अरे तो छुटका बंदर भी कुलांचे भरने लगा है' मेरा मज़ाक उड़ाते हुए उसने कहा। 'चुप बदज़ात बहुत ज़्यादा बोलने लगा है' मैंने जवाब दिया।

वह नशे में इस कदर धुत्त था कि मेरी बात की ओर उसका ध्यान ही नहीं गया। जितना मैं उसे डांटता उतना वह अधिक उग्र होता जाता। बोतल से एक और घूंट भरते हुए उसने हमारे घर की ओर देखकर एक भद्दा सा इशारा किया। 'मेरी जोरू तेरे साब की बीबी नहीं है जो किसी भी गैर मर्द के साथ घूमती फिरे। मैं तेरे साब की तरह अंधा नहीं हूं। अरे तू क्या जाने? वह मेरी लुगाई को सिखाती है कि मुझे छोड़ दे क्योंकि मैं उसकी पिटाई करता हूं।'

वह मेरे सर के ऊपर से हमारे घर की ओर एकटक नज़र जमाए था। मैंने मुड़कर देखा-साब खिड़की पर खड़े थे। क्या उन्होंने सब कुछ सुन लिया? मेरा दिल बहुत ज़ोरों से धड़कने लगा। मैंने पास बैठकर बच्चे को दूध पिलाती धोबिन से कहा, 'अपने पति को कहो कि पीना बंद करे और चुप रहे। उसे पता होना चाहिए कि शरीफ़ आदमी कैसे रहते हैं।' 'वह मेरी बात कहां सुनता है,' वह बोली 'ठीक है, तो फिर मैं मेमसाब से कहकर इसे जेल में बंद करा देता हूं।'

'हूं जेल में बंद कराएगी,' धोबी बिफर गया 'मुझे, अरे वह खुद कोई सीता है क्या...' मैंने आगे कुछ और नहीं सुना। कूड़ेदान को आवेश में एक लात मार मैं घर की और दौड़ गया।

'अब ज़रा तू देख मैं क्या करता हूं, सूअर के बच्चे', धोबी की आवाज़ मेरा पीछा कर रही थी। घर पहुंचकर मैं साब के कमरे की ओर गया।

वह अपनी कुर्सी पर बैठे एक कागज़ को घूर रहे थे।

'आपको कुछ चाहिये साब', मैंने पूछा। मैं उनकी आवाज़ सुनना चाहता था। इत्तमिनान करना चाहता था कि वह नाराज़ नहीं थे, उन्होंने सब कुछ सुना नहीं था। 'मैं ठीक हूं, साब की आवाज़ भट्टी से निकले पिघले सीसे की तरह थी। बस तुम्हारी मेमसाब का इंतज़ार कर रहा हूं।'

'मैं बरामदे में बैठा हूं अगर आपको कुछ चाहिए तो...।' उन्होंने हाथ हिलाकर मुझे जाने को कहा।

मैंने तय किया कि कल सुबह इस धोबी से हिसाब चुकता करुंगा। तब तक उसका नशा भी उतर जाएगा। मैं जानता था वह अफ़सोस करेगा। रोएगा। दारु की एक बूंद न छूने की कसम खाएगा। बस अब मेमसाब जल्दी से लौट आएं। वह सब ठीक कर देगी। कचहरी में भी सब मामले सुलझा लेती हैं। वह जानती है साब को कैसे हंसाना है।

पर *होनी* अंधेरे में कहीं कुटिलता से फिर मुस्कुरा रही थी। 'हे संकटमोचन, मैं हर मंगल को उपवास करूंगा। इक्यावन रुपये का प्रसाद भी चढ़ाऊंगा। इस घर में सुख-शांति बनाए रखना।' मैंने हाथ जोड़कर विनती की।

रात की रानी की भीनी खुशबू और दूधिया चांदनी बरामदे में बिखर चुकी थी जब मेमसाब की गाड़ी आई। मैं झट उनका बैग उठाने के लिए भागा। वह थकी थीं पर फिर भी मुझे देख मुस्कुराई। 'मुझे भूख लगी है मंगू, खाना लगा दो', वह बोलीं।

'खाना तैयार है। बस एक मिनट में मेज़ पर लगाता हूं।' मैंने कहा 'बढ़िया। साब कहां है। 'शायद स्टडी में। 'अरे पर बत्ती क्यों नहीं जल रही', बुदबुदाते हुए वह स्टडी की ओर बढ़ीं। साब का गुस्सा अब तक शांत हो चुका होगा। मेमसाब आ चुकी थीं। वह सुरक्षित थीं। हम सब सुरक्षित हैं। अब सब ठीक हो जाएगा। मैं खाने की प्लेटें मेज़ पर सजा रहा था जब साब की गुस्से भरी आवाज़ सुनाई दी। वह मेमसाब पर कभी गुस्सा नहीं करते थे। आज से पहले मैंने उन्हें इतना नाराज़ कभी नहीं देखा था। मैं नहीं चाहता था कि वह मेमसाब से नाराज़ हों। वह थकी थीं। झगड़ा करने से पहले उन्हें खाना खाकर थोड़ा आराम तो करने देते। मुझे दोनों के बीच रमेश बाबू का नाम सुनाई दे रहा था।

'वह आदमी जो खुद को मेरा दोस्त कहता है।'

'तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। रमेश तो...'

'तुम दिल्ली उसी से मिलने गई थीं, बोलो। नहीं गई थीं?'

'वह तो चला गया...'

मैंने सोचा खाने के लिए बुला लूंगा तो दोनो चुप हो जाएंगे। खा-पीकर ठंडे दिमाग से सोच सकेंगे। मैं स्टडी के पास पहुंचता इससे पहले ही दरवाज़ा भड़ाक से खुला और मेमसाब बाहर निकलीं। उनका मुंह लाल था और आखों से ज्वाला निकल रही थी।

'मेमसाब, खाना तैयार है,' मैंने कहा।

'उस जानवर को खिलाओ। मैं जा रही हूं।' वह बोलीं।

'हां-हां जाओ,' साहब भी तैश में बाहर निकले। 'तुम यहां मेरे साथ क्यों रहोगी? अपने आशिक के पास रहो। जाओ। चली जाओ।' मैं हमेशा साब की इज़्ज़त करता था पर उस क्षण मुझे उनसे नफ़रत हो रही थी। मेरा मन किया कि दोनों कंधों को पकड़कर उन्हें झिझोड़ दूं, कहूं कि वह उस धोबी से अलग नहीं है, पर मैं ऐसा नहीं कर सकता था।

मेमसाब ने कोई जवाब नहीं दिया। साब की तरफ देखा भी नहीं। गाड़ी की चाबी उठाई और घर से बाहर निकल गई।

'अगर तुम अभी गई तो यहां कभी वापस मत लौटना। सुना तुमने? कभी वापस मत आना।'

मेमसाब ने सर हिलाया और गाड़ी में बैठ गई 'मेमसाब रुकिये।' मैं पीछे भागा। मैं उनके साथ जाना चाहता था। पर जब तक मैं पहुंचाता वह गैराज से बाहर निकल चुकी थी। उनकी गाड़ी की लाल बत्तियां कुछ देर दिखाती रहीं। फिर गुप्प अंधेरा छा गया।

मैंने साब से खाना खाने के लिए नहीं कहा। मैं उनका मुंह देखना नहीं चाहता था। उनसे बात नहीं करना चाहता था। बरामदे की सीढ़ियों पर हनुमान चालिसा का पाठ करते हुए मैं मेमसाब के लौटने का इंतज़ार करने लगा।

पता नही उस समय क्या वक़्त था जब मैंने साब को फोन पर चीखते हुए सुना।

'क्या?'

'नहीं'

'कहाँ?'

'कैसे?'

'मैं आ रहा हूं।'

उनकी आवाज़ टूटी हुई थी। फोन पटककर उन्होंने मुझे आवाज़ लगाई। मुझे समझ में नहीं आया कि वो क्या बोल रहे थे। बस इतना जान पाया कि मेमसाब को कुछ हो गया था। मैंने उन्हें दौड़कर गाड़ी में बैठ बाहर जाते हुए देखा। वह मेरी ज़िंदगी के सबसे मुश्किल घंटे थे। मुझे पता नहीं था कि क्या हुआ था। नहीं जानता था कि मेमसाब कहां थी। सुबह की किरणें फूट रही थी और चिड़ियों की चहचहाहट कानों में पड़ रही थी जब साब घर लौटे। उनको देखकर लगा जैसे एक रात में उनकी उम्र दस साल बढ़ गई हो।

'मेमसाब कहां है?' मैंने पूछा

उन्होंने सर हिलाया और धम्म से कुर्सी पर बैठ गए। दोनों हाथों से अपना चेहरा ढांप कर वह ज़ोर-ज़ोर से सुबकने लगे। उनका पूरा शरीर उनके दुख के वेग से झुक गया। पर मेरे मन में साब के प्रति कोई सहानुभूति नही थी।

बाद में पता चला कि मेमसाब की गाड़ी एक तेल के टैंकर से टकरा गई थी, उसमें आग लग गई थी। मेमसाब को जब गाड़ी से बाहर निकाला गया तब तक आग उन तक नहीं पहुंची थी। वे जीवित थीं। पर अस्पताल ले जाते समय, साब के पहुंचने से पहले ही वह मर चुकी थीं। वे हाईवे पर क्यों गई मैं समझ ही नहीं पाया था। शायद रास्ता भटक गई होंगी। मुझे पता नहीं। बस पता था तो बस यही कि मैं तीसरी बार यतीम हो चुका था।

अब मेरे पास करने को कुछ भी नहीं बचा था सिवाय नौकरी छोड़ने के। साब ने नहीं पूछा कि मैं क्यों जा रहा था। उन्होंने मुझे रोका भी नहीं। बस इतना कहा कि मेरी अच्छी सिफ़ारश कर देंगे। मैं बिना कुछ बोले चला आया। पढ़े-लिखे अमीरों के साथ बहुत काम कर चुका था। धोबी ने मुझसे बात करने की कोशिश की थी। उसके पान से सड़े दांतों के बीच खिसियाई सूरत देखते ही मैं आपा खो बैठा था। उसे नर्क में सड़ने की बददुआ देकर मैं चलता बना।

आजीविका के लिए अब साईकिल सुधारने का काम करता हूं। ट्यूब में पंचर लगाता हूं। ब्रेक कसता हूं। टूटे पहिए जोड़ता हूं, कमानियां सीधी करता हूं। स्कूल आने जाने वाले उन तमाम लड़के-लड़कियों की बदौलत मैं दो जून की रोटी जुगाड़ पाता हूं। कभी-कभी कोई कमानी सीधी करते या पेंच कसते-कसते ज़ेहन में उस खौफ़ से सराबोर खुशबूदार रात का मंज़र आंखों के सामने कौंध जाता है। फिर एक युवा आवाज़ तंद्रा तोड़कर मुझे वापस खींच लाती है। 'जल्दी कर दो भाई। मैं स्कूल के लिए लेट हो जाऊंगा।' मैं अपने चेहरे पर जमी उन कौतूहल भरी आंखों में झांककर कहता हूं— 'बस हो गया, तुम अपने रास्ते जल्दी ही पहुंच जाओगे।'